Roll No.....

S-10175

M.A (First Semester)

EXAMINATION, 2022-23

Sanskrit

Paper First

[वैदिक सूक्त एवं निरुक्त]

Time : 2.30 Hours] **[Maximum Marks : 80**

नोट– खण्ड 'अ' में से किन्हीं चार प्रश्नों के और खण्ड 'ब' में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। उत्तर को दी गयी उत्तर पुस्तिका तक सीमित रखें। 'बी' उत्तर पुस्तिका नहीं दी जायेगी।

खण्ड–अ

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

नोट– प्रत्येक प्रश्न 5 अंकों का है। किन्हीं चार के उत्तर दें।

4 × 5 = 20

1. लौकिक और वैदिक संस्कृत में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
2. ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के सवितृ सूक्त के अनुसार सविता देव के कार्यों का वर्णन कीजिए।
3. निरुक्त के प्रयोजन का विवेचन कीजिए।
4. वेदों के आधार पर आर्यों के लिपि विज्ञान को सिद्ध कीजिए।
5. वेदों में वर्णित उषस् सूक्त में उषा के सौन्दर्य वर्णन पर प्रकाश डालिए।
6. नाम और आख्यात की परिभाषा प्रस्तुत कीजिए।
7. सिद्ध कीजिए कि वेद, वैदिक संस्कृति का परिचय कराते हैं।
8. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए–
   (क) आचार्य यास्क
   (ख) उपनिषदों में ब्रह्म का स्वरूप
   (ग) निघण्टु
   (घ) ऋग्वेद का वर्ण्य विषय

खण्ड–ब

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

Note: प्रत्येक प्रश्न 15 अंकों का है। किन्हीं चार के उत्तर दें।

4 × 15 = 60

9. ऋग्वेद के सवितृ देव का विस्तृत परिचय दीजिए।

10. वेदों के महत्व का विवेचन करते हुए उनके वर्ण्य विषय का सामान्य परिचय प्रस्तुत कीजिए।

11. आचार्य यास्क द्वारा रचित निरुक्त के महत्व पर प्रकाश डालिए।

12. महर्षि यास्क की विवेचना शैली तथा मन्त्र व्याख्या पद्धति पर प्रकाश डालिए।

13. निम्नलिखित मन्त्र की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–
आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

14. इन्द्रस्य नु वीर्याणि प्र वोचं यानि चकार प्रथमानि वज्री।
अहन्नहिमन्वपस्ततर्द प्र वक्षणा अभिनत्पर्वतावतानाम्।।

15. सप्रसंग व्याख्या कीजिए–
तद् यानि चत्वारि पदजातानि नामाख्याते चोपसर्गं निपातश्च तानीभानि भवन्ति।

16. सप्रसंग व्याख्या कीजिए।
'न निर्बद्धा उपसर्गा अर्थान् निराहुः' इति शाकटायनः। नामाख्यातयोस्तु कर्मोपसंयोगद्योतका भवन्ति। उच्चावचाः पदार्था भवन्ति इति गार्ग्यः। तद् य एषु पदार्थः प्राहुर इमे तं नामाख्यातयोर अर्थविकरणम्।